कालिंजर दुर्ग

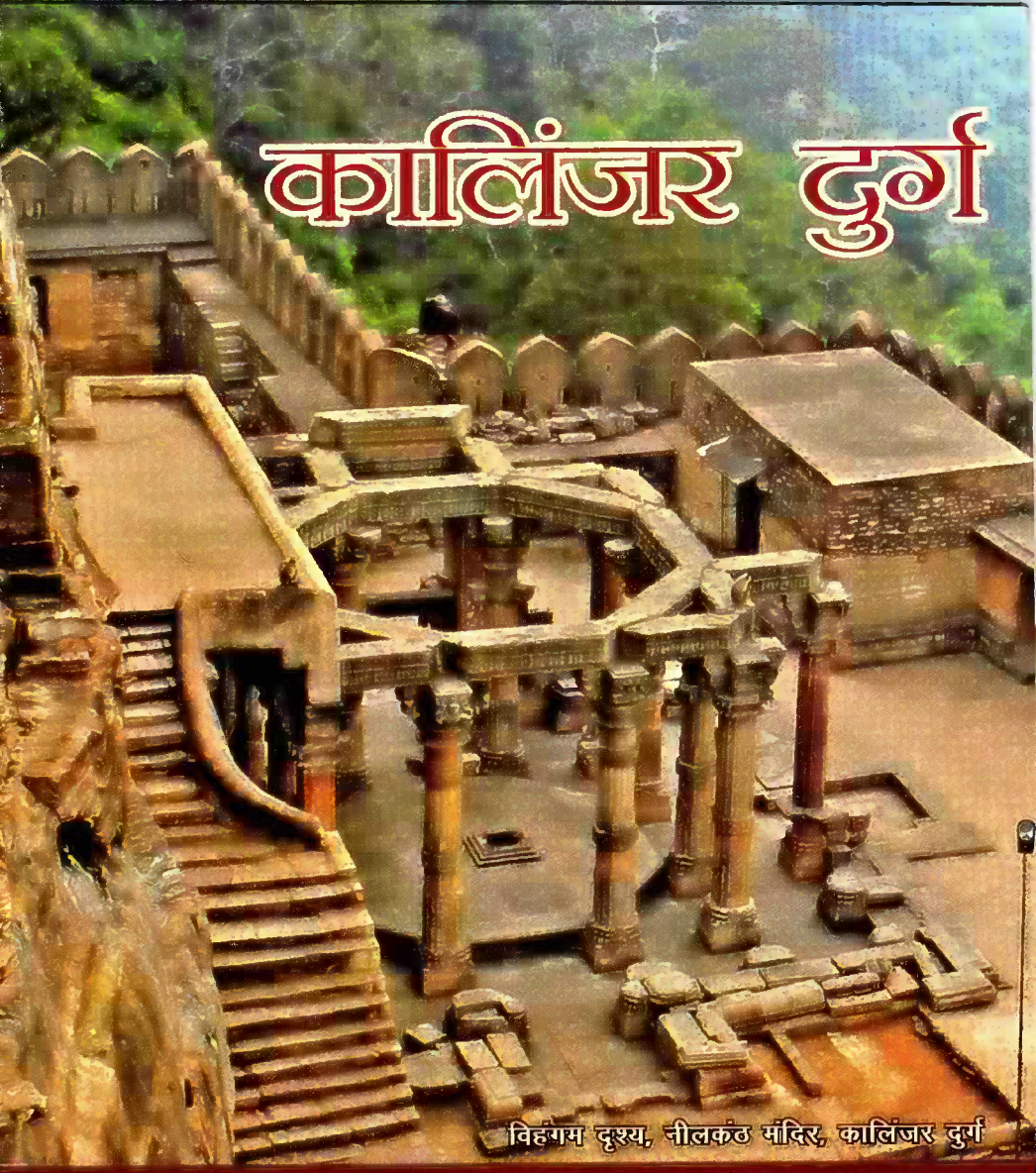

विहंगम दृश्य, नीलकंठ मंदिर, कालिंजर दुर्ग

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

लखनऊ मण्डल, लखनऊ

कालिंजर दुर्ग का भू–विन्यास

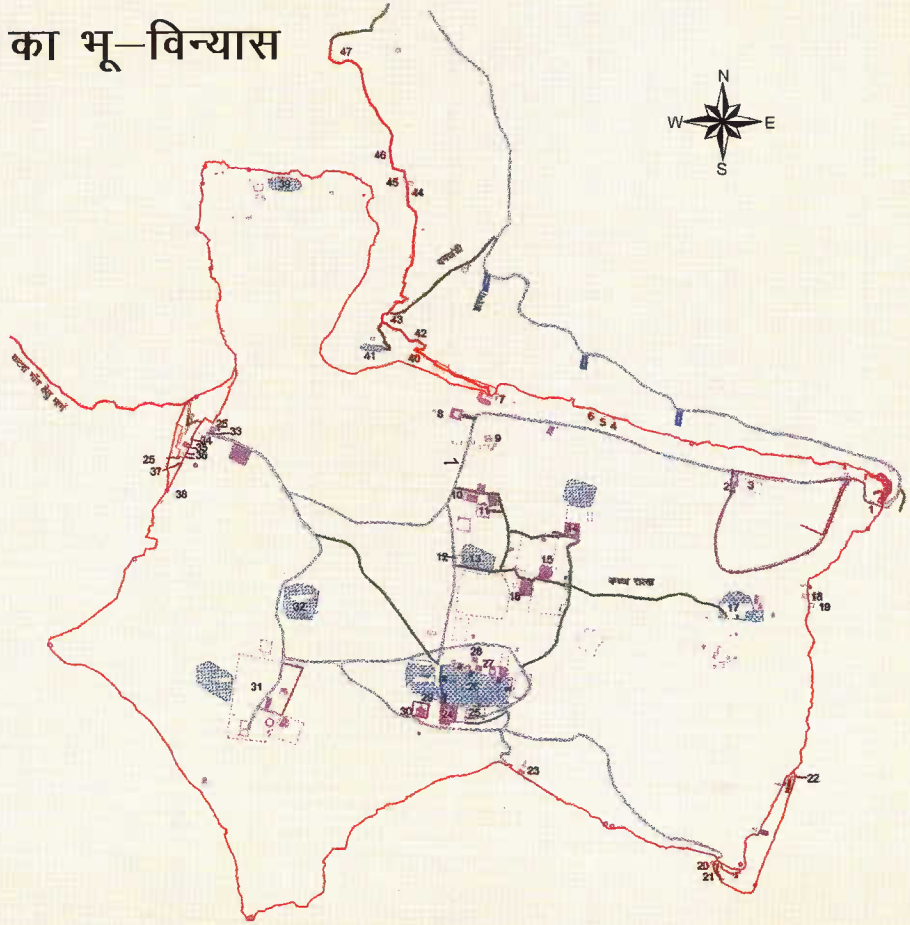

दर्शनीय स्थल

1.मुख्य प्रवेश द्वार
2.टिकट घर
3.पार्किंग
4.पाताल गंगा
5.सीता कुण्ड
6.सीता सेज
7.बड़ा दरवाज़ा (सातवां दरवाज़ा)
8.चौबे महल
9.मध्यकालीन मकबरा और कब्र
10.वेंकट बिहारी मंदिर
11.रानी महल
12.मस्जिद
13.शनिचरी तालाब
14.रंग महल
15.जखीरा महल
16.मोती महल
17.बुड्ढा–बुड्ढी तालाब
18.सिद्ध की गुफा
19.भगवान सेज
20.पन्ना दरवाज़ा
21.रीवां दरवाज़ा
22.मेढुकी भैरव
23.मृग धारा
24.अमान सिंह महल
25.पीने का पानी
26.कोटितीर्थ तालाब
27.पत्थर महल
28.बारादरी
29.राम. जानकी मंदिर
30.मूर्ति के लिए शेड
31.डाक बंगला।
32.राम कटोरा तालाब
33.कटरा गेट/नीलकंठ द्वार
34.हनुमान मंदिर
35.नीलकंठ मंदिर
36.स्वर्गारोहण कुण्ड
37.काल भैरव
38.शौचालय
39.मदार तालाब
40.लाल दरवाज़ा (छठवॉ दरवाज़ा)
41.खंभोरन तालाब
42.बलखण्डी दरवाज़ा (पांचवां दरवाज़ा)
43.बुधभद्र दरवाज़ा (चौथा दरवाज़ा)
44.हनुमान दरवाज़ा
45.चन्डिका दरवाज़ा (तृतीय दरवाज़ा)
46.गणेश दरवाज़ा (द्वितीय दरवाज़ा)
47.आलम दरवाज़ा (प्रथम मुख्य दरवाज़ा)

कालिंजर दुर्ग

विन्ध्याचल की सुरम्य पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित यह किला (उत्तरी अक्षांश 25°1′ तथा 80°29′ पूर्वी देशान्तर) भारत के सुदृढ़तम् क़िलों में से एक है। प्राचीन काल से ही शैव–तपोस्थान होने के कारण यह स्थान कालंजर या कालिंजर नाम से प्रसिद्ध हो गया।

कालिंजर दुर्ग, बाँदा

यहाँ मानवीय गतिविधियों के साक्ष्य पुरापाषाण काल से ही प्राप्त होते हैं। इस दुर्ग से गुप्तकालीन अभिलेखों के अतिरिक्ति अनेक पूर्व–मध्यकालीन मूर्तियाँ एवं अभिलेख प्राप्त हुए हैं। 1023 ई. में महमूद गजनवी के आक्रमण के समय यहां शक्तिशाली चंदेल शासक विद्याधर का शासन था। 1202 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक तथा 1545 ई. में शेरशाह सूरी ने कालिंजर दुर्ग पर आक्रमण कर इस पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। आक्रमण के दौरान दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण शेरशाह की मृत्यु हो गयी। सूर वंश के पश्चात यह मुग़लों एवं बुंदेलों के अधीन रहा। 1812 ई. से कालिंजर ब्रिटिश आधिपत्य में आ गया।

दुर्ग में प्रवेश हेतु मुख्य मार्ग ग्राम की ओर से था जिसमें सात दरवाज़े– आलमगीर दरवाज़ा, गणेश दरवाज़ा, चौबुर्जी दरवाज़ा, बुध–भद्र दरवाज़ा, हनुमान दरवाज़ा, लाल दरवाज़ा तथा बड़ा दरवाज़ा हैं। अनेक मंदिर, मस्जिद, महल एवं सरोवर, यथा–नीलकंठ मंदिर, सीता–सेज, पातालगंगा, मण्डूक भैरव, कोटितीर्थ, बुढ्ढा–बुढ्ढी ताल, पाण्डुकुंड, रामकटोरा, शनिचरीकुण्ड,

मृगधारा, अमान सिंह महल, रानीमहल, जखीरामहल, रंगमहल, मोतीमहल, वेंकटविहारी मंदिर एवं चौबेमहल आदि यहाँ स्थित महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ से समय–समय पर प्राप्त मूर्तियों एवं अभिलेखों को अमान सिंह महल में रखा गया है जो यहाँ के गौरवशाली इतिहास की गाथा कहते हैं।

रक्षा–प्राचीर व प्रवेश द्वार

कालिंजर दुर्ग की रक्षा–प्राचीर की परिधि लगभग 5.7 किमी. है जिसकी ऊँचाई 5 से 12 मी. तक व चौड़ाई 4 से 8 मीटर तक है। इसके निर्माण में बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है। दुर्ग में प्रवेश के लिये दो मार्ग हैं। जिनमें से यह मुख्य मार्ग था जिसमें नीचे से ऊपर जाने के रास्ते में सात दरवाज़े निर्मित हैं। यह क्रमशः आलम दरवाज़ा, गणेश दरवाज़ा, चौबुर्जी दरवाज़ा, बुध–भद्र दरवाज़ा, हनुमान दरवाज़ा, लाल दरवाज़ा तथा बड़ा दरवाज़ा के नाम से प्रसिद्ध हैं। मुगल शैली में निर्मित एवं सभी द्वारों में सबसे बड़ा होने के कारण इस अंतिम द्वार को बड़ा दरवाजा कहा जाता है।

बड़ा दरवाज़ा

नीलकंठ मंदिर

नीलकंठ के नाम से विख्यात मंदिर की गर्भगृह शैलकृत है जिसके सम्मुख स्तम्भ–युक्त मण्डप है। गर्भगृह के द्वार–स्तम्भ पर शिव, पार्वती तथा नदी–देवियों गंगा–यमुना का अंकन है। गर्भगृह के साथ अत्यन्त संकरा प्रदक्षिणा–पथ है। गर्भगृह के भीतर नीलकंठ महादेव के नाम से प्रसिद्ध

मृगधारा, अमान सिंह महल, रानीमहल, जखीरामहल, रंगमहल, मोतीमहल, वेंकटविहारी मंदिर एवं चौबेमहल आदि यहाँ स्थित महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ से समय–समय पर प्राप्त मूर्तियों एवं अभिलेखों को अमान सिंह महल में रखा गया है जो यहाँ के गौरवशाली इतिहास की गाथा कहते हैं।

रक्षा–प्राचीर व प्रवेश द्वार

कालिंजर दुर्ग की रक्षा–प्राचीर की परिधि लगभग 5.7 किमी. है जिसकी ऊँचाई 5 से 12 मी. तक व चौड़ाई 4 से 8 मीटर तक है। इसके निर्माण में बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है। दुर्ग में प्रवेश के लिये दो मार्ग हैं। जिनमें से यह मुख्य मार्ग था जिसमें नीचे से ऊपर जाने के रास्ते में सात दरवाज़े निर्मित हैं। यह क्रमशः आलम दरवाज़ा, गणेश दरवाज़ा, चौबुर्जी दरवाज़ा, बुध–भद्र दरवाज़ा, हनुमान दरवाज़ा, लाल दरवाज़ा तथा बड़ा दरवाज़ा के नाम से प्रसिद्ध हैं। मुगल शैली में निर्मित एवं सभी द्वारों में सबसे बड़ा होने के कारण इस अंतिम द्वार को बड़ा दरवाजा कहा जाता है।

बड़ा दरवाज़ा

नीलकंठ मंदिर

नीलकंठ के नाम से विख्यात मंदिर की गर्भगृह शैलकृत है जिसके सम्मुख स्तम्भ–युक्त मण्डप है। गर्भगृह के द्वार–स्तम्भ पर शिव, पार्वती तथा नदी–देवियों गंगा–यमुना का अंकन है। गर्भगृह के साथ अत्यन्त संकरा प्रदक्षिणा–पथ है। गर्भगृह के भीतर नीलकंठ महादेव के नाम से प्रसिद्ध

नीलकंठ मंदिर

1.35 मी. ऊँचा एकमुखी शिवलिंग है। इसकी भीतरी दीवार पर ऋषियों तथा भक्तों का अंकन है। इस मंदिर के स्तम्भों व दीवारों पर अभिलेख अंकित हैं जिनमें चन्देल शासक मदन वर्मा का 12वीं शताब्दी का अभिलेख महत्वपूर्ण है। निर्माण काल की दृष्टि से गर्भगृह को गुप्तकालीन व इसके मण्डप को चन्देलकालीन माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त मण्डप के बाएं पार्श्व में ऊपर स्वर्गारोहण नामक एक विशाल शैलोत्कीर्ण जलाशय निर्मित है।

यहाँ स्थित खड़ी हुई शोडषभुजी काल भैरव (गजान्तक शिव) की 7.3 मी. ऊँची विशाल प्रतिमा विशेष रूप से दर्शनीय है।

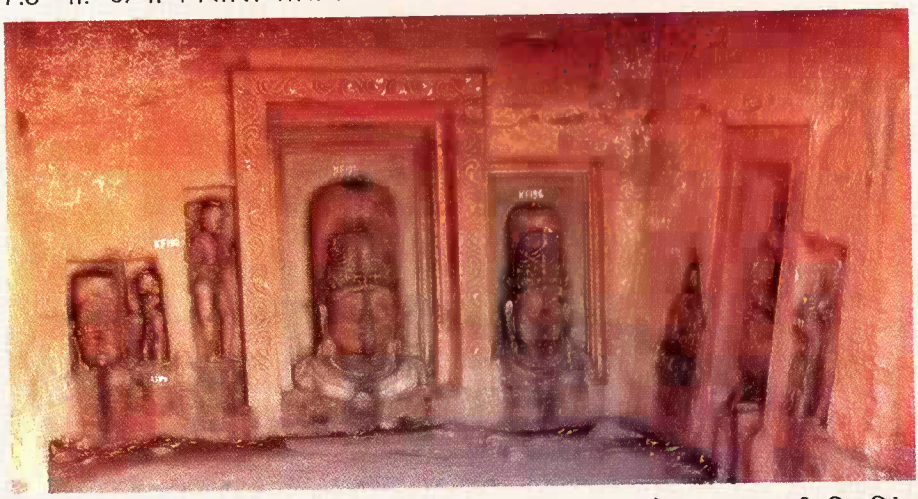

शैलकृत एकमुखी शिवलिंग

वेंकट–बिहारी मंदिर

वेंकट–बिहारी मंदिर

पूर्वाभिमुख बुन्देलकालीन यह मंदिर रानी महल की उत्तर–पश्चिम दिशा में स्थित है। इस मंदिर में प्रदक्षिणा–पथयुक्त गर्भगृह तथा इसके सम्मुख आयताकार मंडप है। गर्भगृह के ऊपर एक आकर्षक गुम्बदाकार शिखर है जो अष्टकोणीय पीठिका पर अवस्थित है। छत की मुंडेर पर छोटी–छोटी स्तम्भयुक्त छतरियाँ सुशोभित हैं। मंदिर की सम्पूर्ण संरचना बुन्देल स्थापत्यकला का एक अनुपम उदाहरण है। शैलीगत विशेषताओं के आधार पर इसे 17–18 वीं शताब्दी का माना जा सकता है।

रानी महल

विशाल प्रवेशद्वार से युक्त यह आयताकार, द्वितलीय बुन्देलकालीन महल अपने विशाल आकार और ऊँचाई के लिए प्रसिद्ध है। आयताकार महल के मध्य में एक खुला बरामदा है जो चारों ओर से स्तम्भ–युक्त गलियारों से जुड़ा हुआ है। बरामदे के चारों ओर निर्मित गलियारों में स्तम्भों पर विभिन्न

रानी महल

प्रकार के ज्यामितीय अभिप्रायों व पुष्प–पत्रावलियों को गचकारी के माध्यम से उकेरा गया है। स्तंभों पर मछली के कवच की भांति सुन्दर अलंकरण निःसंदेह बुंदेल स्थापत्य की विशेषता दर्शाता है। महल के आन्तरिक भाग विशेषकर स्तम्भ, अर्द्ध–स्तंभों एवं तोड़ेदारों छज्जों पर भी गचकारी का कार्य किया गया है।

कोटितीर्थ जलाशय

कालिंजर दुर्ग में छोटे–बड़े अनेक जलाशय हैं जिनमें अधिकांशतः शैलकृत हैं। इनमें पहाड़ी धरातल को काटकर बनाया गया विशाल सरोवर

कोटितीर्थ जलाशय

कोटितीर्थ एक प्रमुख आकर्षण है। इसके तट पर अनेक देवालय थे, जो वर्तमान में अवशेष मात्र रह गये हैं। तालाब की दीवारों पर देवी–देवताओं आदि की मूर्तियाँ लगायी गई थीं जिनको कालान्तर में चूने के पलस्तर से ढक दिया गया था। पौराणिक ग्रन्थों में कहा गया है कि यहाँ पर स्नान करने के पश्चात् कई प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलती है।

इस सरोवर के अतिरिक्त यहाँ कुछ बड़े जलाशय, बुढ्ढा–बुढ्ढी तालाब, शनिचरी तालाब, राम कटोरा तालाब के अतिरिक्त अन्य लघु जलाशय जैसे सीताकुण्ड, पाताल गंगा आदि हैं। इनके अतिरिक्त नीलकण्ठ मंदिर के ठीक ऊपर स्वर्गारोहण तालाब स्थित है।

मृगधारा

मृगधारा

इस जलस्रोत के समीप मृगों के सुन्दर अंकन के कारण इसका नाम मृगधारा पड़ गया जिसमें निरंतर स्वच्छ जल प्रवाहित होता रहता है तथा जो संभवतः अपेक्षाकत ऊंचाई पर स्थित कोटितीर्थ से रिसकर आता है। इस जल स्रोत के ऊपर लगभग 17–18 वीं शताब्दी में एक गुबंदयुक्त कक्ष का निर्माण कर दिया गया था। यहाँ गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि में अंकित लघु अभिलेख हैं जो गुप्तकालीन तीर्थ यात्रियों ने उत्कीर्ण करवाये थे। एक रोचक पौराणिक कथा के अनुसार कुशिक ने अपने सात पुत्रों को उनके आचरण से क्रोधित होकर घर से निष्कासित कर दिया था। इस स्थान पर सात मृगों का तादात्म्य इन्हीं कुशिक–पुत्रों से किया जाता है।

पत्थर महल मस्जिद

पत्थर महल मस्जिद

कोटितीर्थ तालाब के उत्तरी किनारे पर स्थित यह सबसे बड़ी मस्जिद, पत्थर महल के नाम से जानी जाती है। शेरशाह के पुत्र इस्लामशाह ने 1545 ई. कालिंजर विजय तथा अपने राज्यारोहण की स्मृति में कोटितीर्थ के वास्तुखंडों से पत्थर महल मस्जिद का निर्माण करवाया था। मस्जिद के निर्माण में प्रयुक्त प्राचीन वास्तुखंड गुप्त, प्रतिहार एवं चंदेलकालीन हैं। मस्जिद से बड़ी संख्या में अभिलेख प्राप्त हुए हैं, जिनमें देवनागरी के चार एवं फारसी भाषा का एक लेख महत्वपूर्ण है। इनमें सबसे बड़ा अभिलेख प्रताप रूद्रदेव की विक्रम संवत 1543 (1484 ई.) की संस्कृत प्रशस्ति है। अभिलेखों के अतिरिक्त देवनागरी लिपि में अनेक यात्री–लेख भी हैं।

राजा अमान सिंह महल

अनगढ़े पत्थरों से निर्मित यह द्वितलीय आयताकार भवन राजा अमान सिंह महल है, जो दो खंडों में विभक्त है। महल के पूर्वी भाग में एक आँगन, पूर्व एवं दक्षिण दिशा में कक्ष तथा उत्तरी दिशा में स्तंभों पर आधारित दो–मंजिला

राजा अमान सिंह महल

गलियारायुक्त दालान के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। महल का पूर्वी एवं पश्चिमी भाग प्रवेश–द्वार से युक्त एक दालान से जुड़ा है। महल के भीतर प्रवेश करने पर एक विशाल आँगन है जिसके तीन ओर स्तम्भ–युक्त गलियारे हैं। सम्पूर्ण भवन चूने स पलस्तर किया गया है जिस पर सुन्दर गचकारी एवं अलंकरण कर सुसज्जित किया गया है। दूसरी मंजिल पर बने अधिकांश कक्ष नष्ट हो चुके हैं। वर्तमान में इस भवन में कालिंजर से प्राप्त मूर्तियों का संग्रह है।

चौबे महल

चौबे महल

यह द्वितलीय आयताकार महल पूर्वाभिमुख है, जिसका निर्माण अनगढ़े पीले बलुए पत्थर के उपयोग से किया गया है। इसकी दीवारों पर गचकारी का सुन्दर कार्य है। इसका प्रवेशद्वार सादा किन्तु आकर्षक है। प्रवेशद्वार के भीतर प्रवेश करने पर एक खुला बरामदा है जिसके चारों ओर स्तम्भ–युक्त गलियारे हैं जो भीतर से एक आयताकार कक्ष में खुलते हैं। यह स्मारक अन्य महलों की तुलना में कुछ छोटा है। शैलीगत विशेषताओं के आधार पर यह 18वीं शताब्दी का माना जा सकता है।

रंग महल

रंग महल नाम से प्रसिद्ध यह भवन कालिंजर के अत्यंत महत्वपूर्ण महलों में से एक है। संभवतः चित्रों के अंकन के कारण इसका नाम रंग महल पड़ गया जिसके अवशेष यदा–कदा आज भी देखे जा सकते हैं। इस पूर्वाभिमुख महल में एक ड्योढ़ी से होकर आँगन में पहुँचा जा सकता है।

रंग महल

आँगन के तीन ओर बरामदायुक्त दालानें हैं। महल में एक फौव्वारा भी बनाया गया है। यह महल फ़तेहपुर सीकरी स्थित 'सबिस्तान–ए–इक़बाल' और ओरछा के जहाँगीरी महल की याद दिलाता है। शैली के आधार पर इसे मुग़लकालीन (सोलहवीं–सत्रहवीं शताब्दी) माना जा सकता है।

मोती महल

मोती महल के नाम से प्रसिद्ध बुन्देल शैली में निर्मित यह आयताकार महल अनगढ़े पत्थरों को चूने के गारे से जोड़कर एवं प्लास्टर करके बनाया गया है। महल के मध्य भाग में एक त्रितलीय मंदिर है जो अंशतः सुरक्षित है। पूर्वाभिमुख मंदिर में गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणापथ है जिसका प्रवेश महल के आँगन में है। वर्तमान में गर्भगृह मूर्तिविहीन है। शैली के आधार पर यह महल अठारहवीं शताब्दी का माना जा सकता है।

मण्डूक भैरव (गजान्तक शिव)

अनेक छोटे–बड़े वास्तु अवशेषों के अतिरिक्त क़िले के विभिन्न भागों से एकत्रित अमान सिंह महल में रखी हुई मूर्तियाँ मुख्य आकर्षण का केन्द्र हैं।

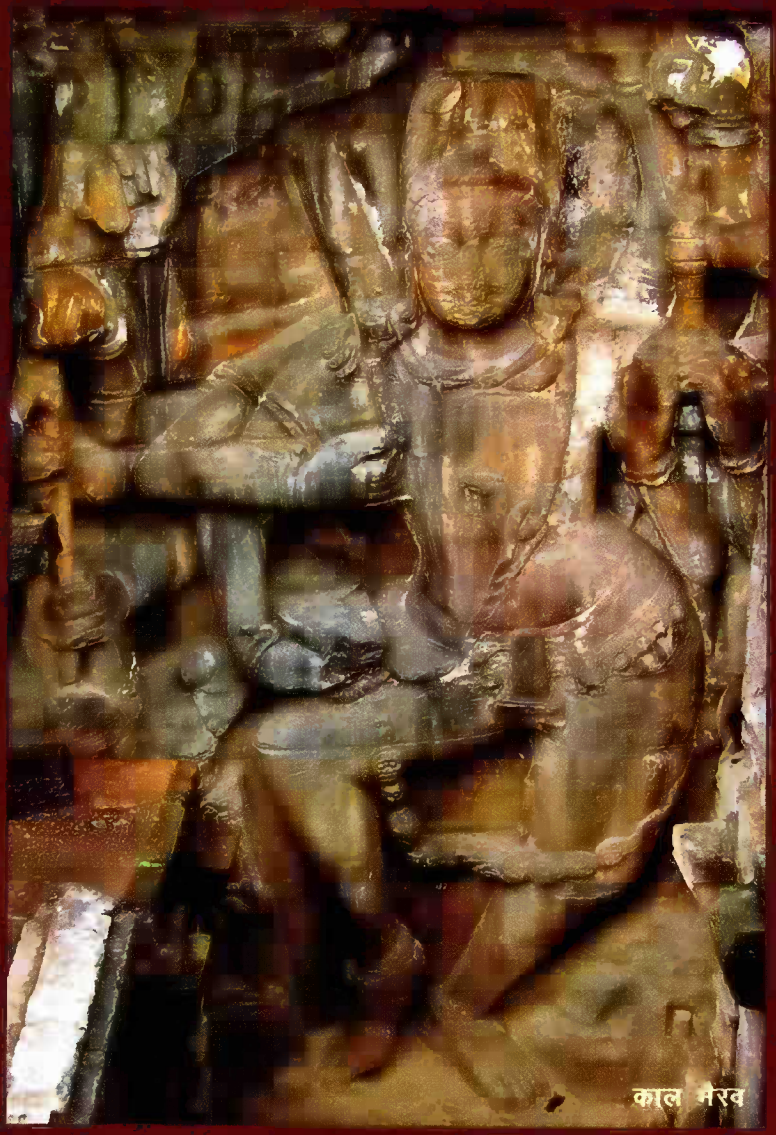

काल भैरव

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, लखनऊ मण्डल,
नवां तल, केन्द्रीय भवन, सेक्टर–'एच',
अलीगंज, लखनऊ–226024
दूरभाष: 0522-2328220, 2745904
ई–मेल: circlelucknow.asi@gov.in, circleluc.asi@gmail.com
वेबसाइट: www.asilucknowcircle.nic.in

आलेख संयोजन: डॉ० शमऊन अहमद, डॉ० विभा पाण्डेय
डिजाइन: आकाश मिश्रा, धर्मजीत सिंह
2019